JESUS REDEEMS MINISTRIES

युवा जीवन

अप्रैल 2025

संसार के अनुसार ढलना बहुत हो गया, किसी से स्वीकृति की प्रतीक्षा करना भी बहुत हो गया, अब केवल क्रूस और मैं ही बचे हैं.... ।

क्रूस और मैं

यह बात नहीं

प्रेम का आदेश

हेलो मित्रों! आप सब कैसे हैं? आशा है कि जीवन बढ़िया चल रहा होगा! हाल ही में, एक खास चलन चल पड़ा है—जो तेजी से फैल रहा है। "आपका BOY FRIEND कैसा है?" या "आपकी Girl Friend कैसी है?" जैसे सवाल आम हो गए हैं। आज के युवाओं में, BOY FRIEND या Girl Friend होना अक्सर सामाजिक स्तर(स्टेटस सिंबल) के तौर पर देखा जाता है। दुर्भाग्य से, मसीही युवाओं सहित कई लोग इस भ्रम के जाल में फंस गए हैं। नतीजतन, अनगिनत युवा अपनी पढ़ाई, भविष्य और यहां तक कि करियर के अवसरों पर ध्यान केंद्रित करना भूल गए हैं।

इस दुनिया में देखा जाए तो प्रेम तीन रूपों में आता है:

1. परमेश्वरीय प्रेम—प्रेम का सबसे ऊंचा रूप (अगापे), जो धर्मी और अधर्मी दोनों के प्रति दयालुता दिखाता है। यह वह प्रेम है जिसे हम बाइबल में देखते हैं।

2. लेन-देन वाला प्रेम—एक "देना-लेना" वाला प्रेम, जहां स्नेह तभी लौटाया जाता है जब उसे प्राप्त किया जाता है। यह वह प्रेम है जो सांसारिक मानकों के आधार पर मानवीय रिश्तों में मौजूद होता है।

3. भ्रामक प्रेम—एक आत्म-केंद्रित प्रेम, जो व्यक्तिगत लाभ से प्रेरित होता है। इस तरह का प्रेम छिपे हुए एजेंडे और चालाकी से भरा होता है।

आज बहुत से युवा लोग भ्रामक प्रेम के भ्रम में फंस गए हैं, अनजाने में इस प्रक्रिया में खुद को खो रहे हैं। लेकिन जब हमारे मनों में अलौकिक प्रेम डाला जाता है, तो हम, मसीही युवा के रूप में, अपने जीवन में वास्तव में मसीह को प्रतिबिंबित कर सकते हैं। हम जिस रोमांटिक प्रेम के बारे में अक्सर कल्पना करते हैं, वह क्षणभंगुर होता है - यह बाहरी सुंदरता, आकर्षण और भाषण पर आधारित होता है, लेकिन वास्तव में, यह अक्सर केवल इच्छा में निहित होता है। सावधान रहें!

पौलुस ने तीमुथियुस को हृदय से प्रेरित करते हुए चेतावनी दी: "मेरे प्रिय बच्चे, प्रेम में जागते रहो।" आइए इसे मन से लें और उस प्रेम में चलें जो वास्तव में स्थायी है!

शास्त्रों में, हम शिमशोन के बारे में पढ़ते हैं, जो परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त एक युवक था। फिर भी, वह दुनिया के सुखों के लिए तरसता था, एक विदेशी देश की स्त्री के प्रेम में पड़ गया, और अंततः अपना अभिषेक खो दिया। अंत में, वह उस अलौकिक उद्देश्य को पूरा करने से पहले ही नष्ट हो गया, जिसे परमेश्वर ने उसके लिए निर्धारित किया था।

मेरे प्रिय युवा मित्रों, आज किस तरह का प्रेम आपको बांधता है? युवावस्था में हम जिन सबसे बड़ी परीक्षाओं का सामना करते हैं, वे अक्सर हृदय के मामलों से उत्पन्न होती हैं। प्रेम में हम जो चुनाव करते हैं, वे हमारे जीवन की दिशा निर्धारित करते हैं—सही प्रेम चुनने से आशीष मिलता है, जबकि गलत प्रेम चुनने से विनाश होता है। मैं आपको यह बता दूँ: यदि आप अपनी युवावस्था में प्रभु पर अपना सबसे गहरा प्रेम रखते हैं, तो आपकी मित्रताएँ स्वस्थ रहेंगी, आपके रिश्ते परमेश्वरीय ज्ञान द्वारा निर्देशित होंगे, और आपकी ज़रूरतें स्वयं परमेश्वर द्वारा पूरी की जाएँगी। जब वह आपका पहला प्रेम होता है, तो वह सही समय पर आपके जीवन में सही व्यक्ति को लाएगा। लेकिन यदि आप मामलों को अपने हाथों में लेते हैं, तो आप उसकी उत्तम योजना में बाधा डाल सकते हैं। रुकें और अपने हृदय की जाँच करें—आप किससे प्रेम करते हैं, और आप किस तरह का प्रेम रखते हैं? यदि आप परमेश्वर की संतान हैं, तो पवित्र आत्मा आपको उन रिश्तों को प्रकट करेगा जो आपके लिए नहीं हैं। मेरे मित्रों, सावधान रहें! परमेश्वरीय प्रेम शाश्वत है—यह स्वर्ग में अनंत जीवन की ओर ले जाता है। जब आपका प्रेम परमेश्वर में निहित होता है, तो आप दूसरों के लिए आशीष, संसार के लिए गवाही और मसीह के प्रेम का प्रतिबिंब होंगे। इसलिए, आज से ही परमेश्वरीय प्रेम का अनुसरण करने का इरादा रखें। अपने हृदय को परिवर्तित होने दें, और आज से आगे आपकी प्रवृत्ति स्वर्गीय प्रेम की हो। प्रभु आपके साथ रहें!

प्रस्तावना

क्रूस!

मेरे प्रिय नौजवान पुत्र और पुत्रियां,

यीशु मसीह के महिमामय नाम में आप पर अनुग्रह और ईस्टर की आशीषें!

मैं प्रभु में आनन्दित हूँ क्योंकि मैं परमेश्वर के प्रति आपके ज्वलंत जुनून, आपकी अटूट गवाही और उसके राज्य के प्रति आपके उत्साह को देखता हूँ। लेकिन याद रखें, युवा विश्वासियों को मसीह के अनुयायी मात्र बनने से कहीं अधिक बुलाहट दी गयी है - उन्हें शिष्यों की एक शक्तिशाली पीढ़ी के रूप में उभरने के लिए बुलाया गया है! आपके माध्यम से, स्कूलों और कॉलेजों में आध्यात्मिक जागृति फैलनी चाहिए, जो हर जगह मसीही छात्रों के हृदयों को झकझोर दे।

हर मसीही छात्र को मसीह के लिए एक गवाह के रूप में जीना चाहिए, केवल नाम के लिए नहीं बल्कि उद्धार की परिवर्तन करने वाली सामर्थ में। उन्हें अपने परिसरों में पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त लोगों के रूप में चलना चाहिए, जो परमेश्वर की उपस्थिति और महिमा को लेकर चलते हैं। जब उनकी उपस्थिति वातावरण को भर देती है, तो सच्चा पुनरुत्थान प्रज्वलित होगा, और तभी हम परमेश्वर की चाल को शैक्षणिक संस्थानों में फैलते हुए देखेंगे जैसा कि वह चाहता है।

इस बात का मेरे हृदय में बड़ा बोझ है कि कई मसीही छात्रों में यीशु के लिए जीने की इच्छा की कमी है। वे मसीही धर्म को महज बाहरी प्रतीक समझते हैं—गले में क्रूस(क्रॉस) पहनना या इसे निशान के तौर पर अपने शरीर पर उकेरना। लेकिन सच्चा मसीही धर्म हमारे द्वारा धारण किए जाने वाले प्रतीकों में नहीं है; यह हमारे द्वारा जीए जाने वाले जीवन, हमारे द्वारा धारण की जाने वाली आग और उसके राज्य के लिए हमारे द्वारा किए जाने वाले प्रभाव में है!

प्रत्येक युवा मसीही को यीशु के प्रति अपने प्रेम की अभिव्यक्ति के रूप में क्रूस की महिमा का बखान करना चाहिए। क्रूस पर, यीशु ने हमारे लिए अकल्पनीय कष्ट सहे। उन्होंने हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए अपना बहुमूल्य, युवा रक्त बहाया, हमें क्षमा और मुक्ति प्रदान की। जो लोग अनंत काल के लिए अभिशप्त थे, उन्हें मुक्ति मिली क्योंकि उन्होंने स्वयं को परम बलिदान के रूप में दे दिया, जिससे पूरी दुनिया को मुक्ति मिली।

क्रूस महज एक प्रतीक नहीं है!

- *यह मसीह के असीम प्रेम का प्रतीक है—*
- *वह स्थान जहाँ उन्होंने दुनिया के पापों की कीमत चुकाई,*
- *जहाँ उन्होंने अपने लोगों को छुड़ाने के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।*
- *गोलगोथा महज एक पहाड़ी नहीं थी; यह परमेश्वरीय बलिदान की वेदी थी!*

प्रिय युवा विश्वासी, क्रूस की महिमा को कभी मत भूलना! यीशु ने आपके लिए जो रक्त बहाया है उसकी सामर्थ को समझने में कभी असफल मत होना! मसीह के शिष्य के रूप में, प्रतिदिन क्रूस की छाया में चलो, अपने आप को पूरी तरह से उसके प्रति समर्पित करो।

जब आप ऐसा करेंगे, तो आप एक पौलुस के रूप में उठेंगे, एक पतरस के रूप में खड़े होंगे, और उसकी खातिर अंत तक दौड़ेंगे!

मसीह के मिशन में
मोहन सी. लाजर

सपना सच होना

हेलो, नौजवानों...! यीशु के नाम पर अभिवादन। आईए हम डॉ. जिहान्स से मेडिकल स्कूल के दौरान उनकी यात्रा के बारे में सुनेंगे—उन्होंने किन चुनौतियों का सामना किया और वह रास्ता जिसने उन्हें दक्षिणी तमिलनाडु से अपने परिवार में पहला डॉक्टर बनने के लिए प्रेरित किया?

क्या आप हमें अपने परिवार, बचपन और स्कूली शिक्षा के बारे में बता सकते हैं?

मेरा नाम जिहान्स है। मेरे पिता एक इंजीनियर हैं और मेरी माँ एक गृहिणी हैं। मेरा एक छोटा भाई है जो वर्तमान में इंजीनियरिंग कर रहा है। बहुत छोटी उम्र से ही मेरा सपना स्पष्ट था—मैं डॉक्टर बनना चाहता था। मेरे दिमाग में कभी दूसरा विकल्प नहीं था। इंजीनियरिंग के बारे में तो सोचा भी नहीं था। डॉक्टर बनना मेरी एकमात्र महत्वाकांक्षा थी।

जब मैं बच्चा था, तब भी, जब मैं पहली कक्षा में था, मैंने अपनी बाइबल में, सबसे सरल अंग्रेजी में लिखा था, "मैं डॉक्टर बनना चाहता हूँ" और इसके लिए प्रार्थना की। यह इच्छा कम उम्र से ही मुझमें गहराई से समा गई थी। हालाँकि, मेरे परिवार में कोई भी मेडिकल क्षेत्र में नहीं था, इसलिए मुझे इस बारे में कोई मार्गदर्शन या समझ नहीं थी कि इस यात्रा में क्या होगा। मैं अपने परिवार में पहली पीढ़ी के डॉक्टर के रूप में एक अनजान दुनिया में कदम रख रहा था।

मेरे बचपन के दौरान, मेरे पिता ने हमें बहुत प्यार और देखभाल के साथ पाला। नतीजतन, मुझे बड़े होने पर कभी कोई बड़ी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। हालाँकि, उस सुरक्षित परवरिश के पीछे, मेरे पिता ने हमें पालने के लिए बहुत संघर्ष किया। हालाँकि मैं उस समय उनकी कठिनाइयों से अनजान था, लेकिन उनके बलिदानों ने मेरी यात्रा की नींव रखी।

ठीक है... आपके माता-पिता ने आपको कॉलेज भेजने के लिए संघर्ष किया। आपका कॉलेज जीवन कैसा था?

जब मैं 11वीं कक्षा में था, तब NEET की शुरुआत हुई थी। आज, हर कोई जानता है कि NEET क्या है, लेकिन तब, यह अपने दूसरे वर्ष में ही था, और हमें नहीं पता था कि इसकी तैयारी कैसे करें। कोई उचित मार्गदर्शन नहीं था, और हमें बताया गया था कि हमारे राज्य बोर्ड के अंक अब मायने नहीं रखेंगे। इसलिए, मैंने पूरी तरह से NEET की तैयारी पर ध्यान केंद्रित किया।

सोमवार से शुक्रवार तक, मैंने अपने स्कूल के पाठ्यक्रम का अध्ययन किया। शनिवार और रविवार को, मैंने NEET कोचिंग में भाग लिया और अपना समय पूरी तरह से परीक्षा की तैयारी के लिए समर्पित किया। मैं एक औसत छात्र था, और NEET को पास करना एक बहुत बड़ी चुनौती की तरह लग रहा था।

जब परिणाम घोषित हुए और काउंसलिंग शुरू हुई, तो मुझे एहसास हुआ कि बुनियादी योग्यता अंक हासिल करना भी कितना कठिन था। लेकिन परमेश्वर की कृपा और अथक मेहनत से, मैंने परीक्षा पास कर ली। हालाँकि, मेडिकल कॉलेज में प्रवेश पाना एक और बाधा थी - जिसके लिए बहुत बड़ी वित्तीय प्रतिबद्धता की आवश्यकता थी। मेरे परिवार को मेरी फीस भरने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा, और यह किसी चमत्कार से कम नहीं था कि परमेश्वर ने हमारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए स्वयं कदम बढ़ाया। उन्होंने न केवल मेरी शिक्षा का प्रबंध किया, बल्कि मुझे इसे आगे बढ़ाने की सामर्थ भी दी।

क्या आप अपने कॉलेज के अनुभव साझा कर सकते हैं?

12वीं कक्षा तक, मैं कभी अपने घर से बाहर नहीं निकला था या अपने माता-पिता से दूर नहीं रहा था। अपने जीवन में पहली

बार, मैंने अपने घर की गर्मजोशी को पीछे छोड़ दिया और अकेले बाहर निकला। वह स्वतंत्रता का मेरा पहला अनुभव था। कॉलेज का मेरा पहला साल किसी चुनौती से कम नहीं था। मुझे कई संघर्षों का सामना करना पड़ा, यहाँ तक कि मैंने छोड़ने के बारे में भी सोचा। सब कुछ नया और अपरिचित लग रहा था। अध्ययन करने के लिए बहुत कुछ था, फिर भी मुझे नहीं पता था कि इसे कैसे करना है। यह एक भारी दौर था।

परमेश्वर ने आपकी शैक्षणिक यात्रा को कैसे आशीष दिया? हमें अपनी परीक्षा के दिनों के बारे में बताएँ।

परीक्षाओं के दौरान, नींद और आराम विलासिता बन गए थे। हर दूसरे छात्र की तरह, मुझे भी खुद को सीमाओं से परे धकेलना पड़ा। चिंता बहुत तीव्र थी - मैं खाने के लिए बहुत बेचैन महसूस करता था, और व्यावहारिक परीक्षाएँ विशेष रूप से नर्वस करने वाली होती थीं। डर मुझे इतना जकड़ लेता था कि कभी-कभी ऐसा लगता था कि मेरी सारी तैयारी के बावजूद मेरा दिमाग खाली हो गया है। नींद आती थी, लेकिन परीक्षा के बारे में सोचकर ही मैं जाग जाता था। अधिकांश दिनों में, मैं मुश्किल से तीन घंटे सो पाता था। यहाँ तक कि अगर मैं अपना अलार्म सुबह 4 बजे के लिए सेट करता, तो मैं बहुत पहले उठ जाता, आराम नहीं कर पाता।

उन बेचैन रातों में, मुझे भजन 34 में बहुत आराम मिलता था। मैं इसे आंसुओं के साथ पढ़ता था, लेकिन जब मैं इसे खत्म करता, तो मेरे हृदय में शांति छा जाती, जिससे मुझे आगे बढ़ने की ताकत मिलती। फिर, मैं नए सिरे से साहस के साथ अपनी पढ़ाई शुरू करता। जब भी मैं संघर्ष करता, मेरे दोस्त मेरे साथ एक सहारे के स्तंभ की तरह खड़े होते। उनके प्रोत्साहन ने मुझे हर कठिनाई से निकलने में मदद की। इस तरह से मेरा कॉलेज जीवन आगे बढ़ा - परीक्षणों, लचीलेपन और परमेश्वरीय अनुग्रह की यात्रा।

इन सबके बीच, हमारे पास लगभग 15 से 20 लड़कियों की एक छोटी सी मसीही संगति थी। हर रविवार की सुबह, बिना चूके, हम एक घंटे के लिए बाइबल पढ़ने और साथ में प्रार्थना करने के लिए एकत्रित होते थे। वह संगति हमारी ताकत, हमारा आध्यात्मिक सहारा बन गई। अपने व्यस्त कार्यक्रमों के बावजूद, हमने कभी इस संगति को नहीं छोड़ा। विश्वास और एकता के इन क्षणों के माध्यम से ही हमें सहने और आगे बढ़ने की ताकत मिली।

हमें अपनी चिकित्सा पढाई यात्रा के अंतिम क्षणों के बारे में बताएं...

जिस क्षण मुझे अपने अंतिम परिणाम मिले, वह मेरे जीवन के सबसे सुखद अनुभवों में से एक था। अपनी परीक्षाएँ लिखते समय, मुझे एक विषय विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण लगा, और इसने मुझे भयभीत कर दिया। मैंने ईमानदारी से प्रार्थना की, "परमेश्वर, मैं फिर से पढ़ने के लिए इस कॉलेज में वापस नहीं आना चाहती।" परमेश्वर के असीम अनुग्रह से, मैंने हर विषय में सफलतापूर्वक उत्तीर्णता प्राप्त की। वह क्षण हमेशा के लिए मेरी यादों में अंकित है। जब मैं वहाँ खड़ा था, तो खुशी से अभिभूत था, पिछले साढ़े पाँच सालों के संघर्ष एक पल में मेरी आँखों के सामने घूम गए। मुझे एहसास हुआ कि हर कठिनाई, हर रात की नींद और हर त्याग ने इस निर्णायक क्षण को जन्म दिया है। मेरे बचपन के सपने के पूरा होने से मुझे बहुत खुशी मिली।

आकांक्षी डॉक्टरों के लिए कुछ शब्द...

मेडिकल की पढ़ाई करने के लिए दृढ़ संकल्पित सभी लोगों के लिए - अगर मैं, कई कमजोरियों वाला एक औसत छात्र, सफल हो सकता हूँ, तो आप भी सफल हो सकते हैं! लगन से पढ़ाई करें, चुनौतियों का सामना करते हुए दृढ़ रहें और सबसे महत्वपूर्ण बात, परमेश्वर की उपस्थिति की तलाश करें और प्रार्थना करें। वही यीशु जिसने मुझे बुद्धि दी, वह निश्चित रूप से आपको भी बुद्धि देगा। चाहे आप NEET की तैयारी कर रहे हों या पहले से ही मेडिकल स्कूल में हों, बिना विचलित हुए अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान दें। ईमानदारी से प्रार्थना करें, और परमेश्वर आपका मार्गदर्शन करेंगे। जब आप प्रार्थना के साथ अध्ययन करते हैं, तो प्रभु स्वयं आपको सही विषयों पर ध्यान केंद्रित करने और आपकी परीक्षाओं में आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार करने में मदद करेंगे।

प्रिय नौजवानों, डॉ. जिहान्स की यात्रा आसान नहीं थी। कमज़ोरी और कठिनाई के क्षणों में, परमेश्वर उसके साथ चलता रहा, उसे मज़बूती दी और सबसे कठिन रास्तों से उसे गुज़ारा। अगर सालों के त्याग, रातों की नींद हराम करने और परिवार से अलग रहने के बाद भी वह आज डॉक्टर बन सकतें है, तो जान लें कि परमेश्वर आपके जीवन में भी ऐसा करने में सक्षम है! उस पर भरोसा रखें, अटूट विश्वास के साथ प्रार्थना करें और कार्य करें। जीत आपकी है!

भाग जाओ!

प्रिय बड़े भाई, मैं आंध्र प्रदेश से राज हूँ, वर्तमान में 11वीं कक्षा में पढ़ रहा हूँ। बचपन से ही, मैं एक मेहनती छात्र रहा हूँ, अपने सभी विषयों में अव्वल रहा हूँ। मैंने अपनी 10वीं कक्षा की परीक्षा में 480 से अधिक अंक प्राप्त किए और 11वीं कक्षा में प्रवेश किया, उस विषय को चुना जिसे मैं वास्तव में पसंद करता हूँ। मैं स्वाभाविक रूप से एक शर्मीला व्यक्ति हूँ और दूसरों से ज़्यादा बात नहीं करता। हालाँकि, मेरी कक्षा की शिक्षिका अक्सर मुझसे बातचीत करती हैं - पढ़ाई से परे - अक्सर व्यक्तिगत मामलों पर चर्चा करती हैं। कई बार, वह बात करते समय मुझे छूती हैं और करीब आने की कोशिश करती हैं। कक्षा के खत्म होने के बाद, वह मुझे एक तरफ बुलाती हैं और मुझसे अकेले में बात करती हैं। ऐसे मौकों पर, वह मुझे अनुचित वीडियो भी दिखाती हैं और मुझे उपहार देती हैं, जैसे कि गहरा स्नेह व्यक्त कर रही हों। यह मुझे गलत लगता है। मेरी बेचैनी को महसूस करते हुए, मैंने उसके साथ अकेले रहने से बचना शुरू कर दिया है। लेकिन ऐसा लगता है कि इससे वह नाराज़ हो गई है। अब, वह मुझे बेवजह डांटती है और मेरे सहपाठियों के सामने मुझे अपमानित भी करती है। मुझे नहीं पता कि क्या करना है। यह स्थिति मेरी पढ़ाई को प्रभावित कर रही है, और मैं खोया हुआ महसूस कर रहा हूँ। मैं इसे किसी के साथ साझा करने में असमर्थ हूँ। कृपया मेरी मदद करें। - राज, आंध्र प्रदेश

प्रिय भाई राज,

मैं आपकी चुनौती को पूरी तरह से समझता हूँ। यदि समस्या साथी छात्रों के कारण होती, तो आप इसकी रिपोर्ट किसी शिक्षक से कर सकते थे या मदद माँग सकते थे। लेकिन जब आपका मार्गदर्शन करने वाला व्यक्ति - शिक्षक - अनुचित इरादे रखता है, तो मदद के लिए किससे संपर्क करें या अपनी चिंताओं को कहाँ व्यक्त करें, इस बारे में झिझक पूरी तरह से समझ में आती है।

राज, चाहे वे किसी भी पद पर हों, एक शिक्षक द्वारा सीमाओं को पार करना अस्वीकार्य है। एक शिक्षक के लिए अनुचित तरीके से बोलना या व्यवहार करना अनुचित है। इसलिए, स्वयं को पीछे हटाना और दूर रखना बुद्धिमानी है। एक शिक्षक की भूमिका ज्ञान, अनुशासन और मूल्यों को प्रदान करके एक छात्र को एक रत्न बनाना है - न कि उनके भविष्य को खराब करना। आपको अपने दिल और दिमाग में यह दृढ़ता रखनी चाहिए: यह एक गलत रिश्ता है, एक भावना जिसका विरोध किया जाना चाहिए। एक सच्चा शिक्षक अपने छात्रों को अपने बच्चों की तरह मानता है, उनका पालन-पोषण करता है और उन्हें महानता की ओर ले जाता है। जब उस भूमिका का अनुचित शब्दों या कार्यों के लिए दुरुपयोग किया जाता है, तो उसकी निंदा की जानी चाहिए। इसलिए, आपका पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम इससे दूर रहना होना चाहिए। स्वयं को दूर रखें। अपने आप को सुरक्षित रखें। इसे अपना संकल्प बनाएं।

हालांकि, आज का मीडिया, ऐसे अनैतिक संबंधों को चित्रित करके और इन भूमिकाओं में प्रसिद्ध अभिनेताओं को दिखाकर, उन्हें स्वीकार्य के रूप में प्रचारित करता है। वे घोषणा करते हैं, "यह भी प्यार है। इसमें कुछ भी गलत नहीं है। यह एक खूबसूरत रिश्ता है।" ऐसा करके, वे इन गलत रिश्तों और अशुद्ध भावनाओं पर ISI, AGMARK की मुहर लगाते हैं, समाज को यह विश्वास दिलाते हैं कि ऐसा आचरण एक आदर्श संस्कृति का हिस्सा है। इस तरह मीडिया सांस्कृतिक प्रवृत्तियों के रूप में पापपूर्ण श्रंखला को सामान्य बनाता है।

तो, राज, आपको सतर्क रहना चाहिए।

क्या आपने कभी सोचा है कि अगर आप धोखे के इस रास्ते पर चलते रहे तो क्या विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं?

- *जो बात सामान्य बातचीत के रूप में शुरू होती है, वह अंततः खतरनाक कार्यों की ओर ले जा सकती है, जो आपको विनाश के गर्त में ले जा सकती है।*
- *आपकी शिक्षा, सपने और भविष्य आपकी आंखों के सामने ढह सकते हैं। अगर स्कूल प्रबंधन को इस तरह के रिश्तों में आपकी संलिप्तता के बारे में पता चल जाता है, तो आपको नौकरी से भी निकाल दिया जा सकता है।*
- *आप न केवल खुद को बल्कि अपने माता-पिता को भी शर्मिंदा कर सकते हैं, उनकी प्रतिष्ठा को धूमिल कर सकते हैं।*
- *गलत काम करने का अपराधबोध आपको हर दिन परेशान करेगा, जो आपके विवेक पर एक असहनीय बोझ बन जाएगा।*
- *समाज में आपका अच्छा नाम, जो वर्षों से बना हुआ है, एक पल में बर्बाद हो सकता है।*
- *इसके बाद होने वाली भावनात्मक उथल-पुथल अवसाद का कारण बन सकती है, जिसे अगर अनियंत्रित छोड़ दिया जाए, तो आप खुद को नुकसान पहुँचाने जैसे दुखद फैसलों की ओर बढ़ सकते हैं। इसलिए, समझदारी से चुनाव करें, राज। आज जो रोमांचक लग सकता है, वह कल अपरिवर्तनीय पछतावे का कारण बन सकता है।*

क्या होगा अगर आप इस रिश्ते से दूर जाने का फैसला करते हैं...?

- आप अपनी पढ़ाई पर फिर से ध्यान केंद्रित कर सकते हैं और सफलता के शिखर पर पहुँच सकते हैं।
- आपके माता-पिता, जो आप पर भरोसा करते हैं, आपकी उपलब्धियों पर गर्व करेंगे और खुशी महसूस करेंगे।
- अपने साथियों के बीच, आप एक ईमानदार और अनुशासनप्रिय छात्र के रूप में खड़े होंगे।
- शिक्षक आपके निर्णय को अस्वीकार कर सकते हैं; वे आपकी आलोचना भी कर सकते हैं या आप पर झूठा आरोप भी लगा सकते हैं। लेकिन यदि आप अपने संकल्प पर दृढ़ हैं, तो आप निश्चित रूप से इससे ऊपर उठेंगे। कभी भी खुद को पापपूर्ण कार्य में न फँसने दें।

राज, आपकी तरह ही, बाइबल में युसूफ नाम का एक युवक था। जब एक महिला ने उसे पाप करने के लिए लुभाया, तो उसने संकोच नहीं किया - वह भाग गया! अपने दिल की गहराई में, उसने अपनी युवावस्था में पवित्रता और धार्मिकता का जीवन जीने का दृढ़ निर्णय लिया था। उस एक अटल विकल्प ने अंततः उसे महानता की ओर अग्रसर किया। इसलिए, बुद्धिमानी से सोचें और निर्णायक रूप से कार्य करें! यीशु आपकी मदद करेंगे। वह आपको एक शुद्ध और विजयी जीवन जीने के लिए मजबूत करेंगे।

मुक्तिदाता क्रूस

"परन्तु मुझे घमण्ड न करना, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।" (गलातियों 6:14)।

पौलुस वह व्यक्ति था जो यीशु के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ और उसने मसीहियों को सताया, जो उसका प्रचार करते थे उन्हें कैद कर लिया और उन्हें गहरा कष्ट पहुँचाया। उसने कलीसिया को बहुत कष्ट पहुँचाए। वह यहूदी परंपराओं के प्रति गहरी आस्था और भक्ति रखने वाला व्यक्ति था। प्रेरितों के काम अध्याय 9 में, प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं को सीधे पौलुस के सामने प्रकट किया। उसका जीवन परिवर्तित हो गया। उसने पहचाना कि यीशु मसीह ही सच्चा परमेश्वर है और उसे अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। उसके बाद, उसने यीशु को समर्पित जीवन जिया और अनेक कलीसियाएँ स्थापित कीं। पौलुस के द्वारा, परमेश्वर ने कलीसिया को कैसा होना चाहिए और विश्वासियों को किस प्रकार विश्वास में बढ़ना चाहिए, इस बारे में अनेक पत्र लिखे। उसने यीशु मसीह के क्रूस के साथ एकता में जीवन जिया।

यदि हम उसके पत्रों को ध्यान से पढ़ें, तो हम देख सकते हैं कि उसने प्रत्येक पत्र में स्पष्ट रूप से या अनुमानित रूप से यीशु के क्रूस का उल्लेख किया है। क्रूस पाप की भयावहता को प्रकट करता है।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जो कहते हैं,

- "स्वर्ग मेरा सिंहासन है, और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी है" (यशायाह 66:1)।
- सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण किया (भजन 121:2)।
- सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जो तारों को गिनता है और उन्हें नाम से पुकारता है (भजन 147:4)।

यही परमेश्वर दो अपराधियों के बीच क्रूस पर लटका हुआ था, जो चोर की तरह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच लटका हुआ था। भजन (33:16) इस बारे में बोलता है: जिस परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण किया, वह मनुष्य के रूप में प्रकट हुआ और यीशु नाम से क्रूस पर लटका हुआ था।

स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माता को उस क्रूस पर क्यों लटकना पड़ा? उसने कौन सा पाप किया था?

उन दिनों, रोमन सरकार ने राज्य के खिलाफ विद्रोहियों, हत्यारों, लुटेरों और सबसे खतरनाक अपराधियों के लिए सूली पर चढ़ना – प्राणदंड का सबसे क्रूर रूप - आरक्षित किया था। यीशु ने कौन सा अपराध किया था? उसे क्रूस पर क्यों जाना पड़ा?

यदि हम उनके जीवन की बारीकी से जाँच करें, तो हम पाते हैं कि यहूदा इस्करियोती, जिसने साढ़े तीन साल तक उनके साथ रहने के बाद यीशु को धोखा दिया, ने अंततः कबूल किया, "मैंने निर्दोष लोगों का खून किया है!" (मत्ती 27:4)।

जब यीशु को मृत्युदंड की सजा सुनाई गई, तो उसे रोमी गवर्नर पिलातुस के पास भेजा गया। उससे पूछताछ करने के बाद, पिलातुस ने घोषणा की, "मुझे उसमें मृत्यु के योग्य कोई दोष नहीं मिला!" (यूहन्ना 19:4)।

यहाँ तक कि रोमी सूबेदार और सैनिकों ने भी गवाही दी, "सचमुच, यह परमेश्वर का पुत्र था!" (मत्ती 27:54)। उसके शत्रु, जो उससे ईर्ष्या करते थे और उस पर झूठा आरोप लगाते थे, उसमें कोई पाप नहीं बता पाए। यीशु ने एक पापरहित जीवन जिया।

फिर भी, यह पापरहित यीशु मसीह हमारे अपराधों के लिए घायल हुआ, हमारे अधर्म के लिए कुचला गया। यह हमारे पाप ही थे जो उसे क्रूस पर ले गए। क्रूस बताता है कि पाप कितना भयानक है।

शायद आज भी आप पाप में जी रहे हैं—शराब, नशीली दवाओं, वासना, अभिमान, ईर्ष्या, गपशप या गुप्त पापों के आदी हैं। आप सोच सकते हैं कि ये पाप महत्वहीन हैं। लेकिन यह पाप ही था जिसने परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर चढ़ाया। हमारे पापों के कारण परमेश्वर के पवित्र जन को क्रूस पर लटका दिया गया।

"जिसने हमें बचाने के लिए अपने आप को हमारे पापों के लिए दे दिया" (गलातियों 1:4)।

यह हमारा पाप ही था जिसने उसे उस भयानक क्रूस पर चढ़ाया। पाप भयानक है—इसने पवित्र परमेश्वर को अपराधी की तरह क्रूस पर चढ़ा दिया।

प्रिय युवक/युवती, भले ही आप यीशु के बारे में जानते हों, भले ही आप चर्च जाते हों और समझते हों कि यीशु आपके लिए मरा, फिर भी आप कब तक पाप में बने रहेंगे, उसे फिर से क्रूस पर चढ़ाते रहेंगे? आप कब तक अपने पापों से उसे दुखी करेंगे?

आज, प्रभु आपसे बात कर रहे हैं—पाप से दूर होने, पश्चाताप करने और खुद को पवित्र जीवन के लिए समर्पित करने के लिए। यीशु को क्रूस पर लटकते हुए देखें! आज उसकी ओर मुड़ें और उसके पास दौड़ें!

क्रूस और मैं

पूरी दुनिया में, कलीसियाओं में, घरों में और चर्च मीनारों पर क्रूस की छवियाँ देखी जा सकती हैं। मसीही अक्सर प्रतीक के रूप में अपने गले में क्रूस पहनते हैं, और कुछ मसीही लेंट(चालीसा) के दौरान अपने माथे पर क्रूस चिन्ह लगाते हैं। इस तरह, क्रूस कई मसीहियों के जीवन में सिर्फ़ एक प्रतीक बन गया है।

लेकिन यीशु ने अपने अनुयायियों से क्या कहा? उन्होंने कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे, प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले" (लूका 9:23)।

कई लोग क्रूस को दुख, क्लेश, निन्दा और अपमान से जोड़ते हैं। लेकिन आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि ये सभी मसीही जीवन का हिस्सा हैं। आपको स्वयं मसीह से अपना क्रूस उठाना सीखना चाहिए। यीशु ने सिर्फ़ क्रूस पर दुख नहीं सहा - उन्होंने अपना प्रेम, क्षमा, दया और उद्धार भी दिखाया। यहाँ तक कि उन लोगों के लिए भी जिन्होंने उनका मज़ाक उड़ाया, उन्हें अपमानित किया और बेरहमी से पीटा, यीशु ने करुणा और प्रेम दिखाया। क्रूस पर सब कुछ सहते हुए, उसने प्रार्थना की, "हे पिता, उन्हें क्षमा कर, क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं" (लूका 23:34)। यही बात यीशु हमें क्रूस के माध्यम से सिखाते हैं। क्रूस केवल पीड़ा सहने के बारे में नहीं है; यह उन लोगों को क्षमा करने और उनसे प्रेम करने के बारे में है जो आपको अस्वीकार करते हैं, अपमानित करते हैं और आप पर आरोप लगाते हैं।

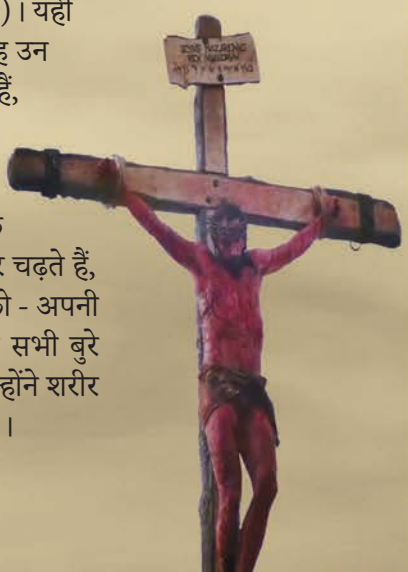

यदि आप दूसरों को क्षमा करना चाहते हैं, तो आपको यीशु की तरह सब कुछ सहना सीखना होगा। "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ; अब मैं जीवित नहीं रहा, बल्कि मसीह मुझ में जीवित है" (गलातियों 2:20)। जब आप प्रतिदिन मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ते हैं, तो आप वास्तव में इस धरती पर जीवित रहेंगे। इसका मतलब है कि अपने पुराने स्वभाव को - अपनी पापी इच्छाओं, सांसारिक अभिलाषा, दुर्भावना, कड़वाहट, क्रोध, झगड़े, मतभेद और सभी बुरे विचारों को पवित्र आत्मा की मदद से क्रूस पर समर्पित करना। "जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी वासनाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है" (गलातियों 5:24)।

जब आप अपना जीवन क्रूस पर चढ़े यीशु को देखने और उनका अनुसरण करने के लिए समर्पित करते हैं, तो आप सब कुछ सहने और दूसरों से वैसा ही प्रेम करने में सक्षम होंगे जैसा उन्होंने किया था।

यदि आप अपने आस-पास के लोगों के प्रति प्रेम, करुणा और क्षमा नहीं दिखाते हैं, तो आप मसीह के योग्य नहीं हो सकते। यीशु ने कहा, "जो कोई अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे न आए, वह मेरे योग्य नहीं है" (मत्ती 10:38)। वह चाहता है कि जो कोई उसका अनुसरण करता है, वह उसके पदचिन्हों पर चले।

हालाँकि, आज बहुत से लोग क्रूस का प्रतीक लेकर चलते हैं, लेकिन यीशु की तरह नहीं, बल्कि दुनिया की तरह जीते हैं। यदि आप उनकी तरह जीते हैं, तो आप मसीह के योग्य नहीं होंगे। इसके बजाय, दूसरों के लिए वही करें जो यीशु ने आपके लिए किया है, और तब आप वास्तव में उसके योग्य होंगे।

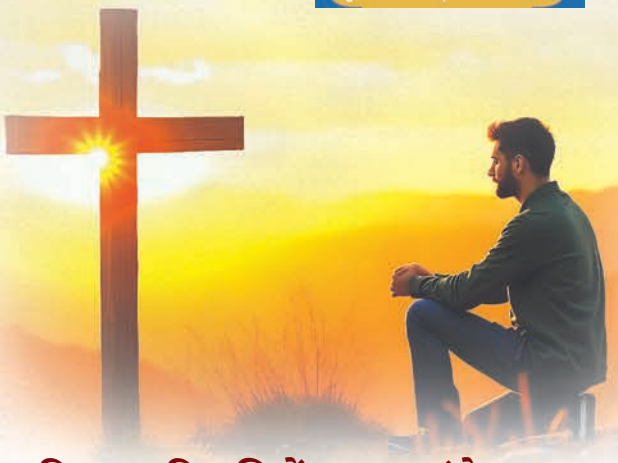

प्रिय युवा विश्वासियों, क्रूस का संदेश उन लोगों को मूर्खता जैसा लगता है जो नाश हो रहे हैं, लेकिन हम जो बचाए जा रहे हैं, उनके लिए यह परमेश्वर की सामर्थ है (1 कुरिन्थियों 1:18)। अपने जीवन के केंद्र में क्रूस के साथ हर दिन जीना सीखें। तब आपको नई ताकत मिलेगी। यह केवल गाना पर्याप्त नहीं है, "संसार को छोड़ कर, सलीब को लेकर।" आपको सचमुच प्रतिदिन अपना क्रूस उठाना चाहिए और यीशु के समान चलना चाहिए।■

इग्नाइटर्स यूथ फ़ेलोशिप एक जगह है जहां युवा अपनी आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करते हैं जीवन की गहन सच्चाइयों की खोज करें बाइबल, और प्रार्थना करने में शक्ति पाएँ एक समूह के रूप में देश।आपका स्वागत है इस फ़ेलोशिप में शामिल होने और बढ़ने के लिए मज़बूत। चलो भी! अपने आप को मजबूत करो,और दूसरों को मजबूत करने के लिए तैयार हो जाइये !

हर पहले रविवार

Mumbai – Dharavi
Timing: 5.00 PM- 7.30 PM
World Revival Prayer Centre
2nd Floor, Above Balakrishna
Farsan Mart, Opp. Apna Restaurant,
Near Kamarajar School,
90 Feet Road,
9004882470

हर दूसरे रविवार

THANE
Timing: 5PM - 7:30PM
R.P. Mangala High School
(Near Railway Station),
Room No.10,
Opp. Bank of Maharashtra,
Thane (East)
9004882470

हर चौथे रविवार

Mumbai-Malad
Timing: 4.00 PM – 6.00 PM
Bethel Ground Floor
305/E, Mith Chauky,
Marve Road,
Malad (W)
9664050567 | 9619996976

अंजीर का पेड़ फिर से उग गया

प्रिय मित्रों, यीशु के अतुलनीय नाम में आपको अभिवादन!

पिछले महीने, हमने इस्राएलियों की उद्गम का पता लगाया। इस महीने, आइए हम इस्राएल की भूमि के ऐतिहासिक गठन की अध्ययन यात्रा करें।

जबकि मिस्र में, परमेश्वर की आशीष के तहत इस्राएलियों की संख्या बहुत बढ़ गई। हालाँकि, एक नया फिरौन, जो यूसुफ को नहीं जानता था, सत्ता में आया और उन्हें गंभीर उत्पीड़न के अधीन कर दिया। उनके दुख के जवाब में, परमेश्वर ने अपने लोगों को मुक्त करने के लिए उनमें से एक उद्धारकर्ता—मूसा—को चुना।

उन दिनों में, प्रभु ने अब्राहम के साथ एक वाचा बाँधी, जिसमें घोषणा की गई:

"मैं तुम्हारे वंशजों को यह भूमि देता हूँ—मिस्र की नदी से लेकर महानद, फरात तक— जिनमे केनी, केनिज्जी, कदमोनी, हित्ती, परिज्जी, रपाई, एमोरी, कनानी, गिर्गाशी और यबूसी लोग रहते हैं।" (उत्पत्ति 15:18-20)

जब उसके लोगों की पुकार उसके पास पहुँची, तो प्रभु ने मूसा से कहा:

यहोवा ने कहा, "मैंने मिस्र में अपने लोगों के दुःख को देखा है। मैंने उन्हें दास-चालकों के कारण चिल्लाते हुए सुना है, और मैं उनके दुःख के बारे में चिंतित हूँ। इसलिए मैं उतर आया हूँ कि उन्हें मिस्रियों के हाथ से छुड़ाऊँ, और उस देश से निकालकर एक अच्छे और बड़े देश में ले जाऊँ, जिसमें दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, और जो कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी, और यबूसी लोगों का निवास है।"(निर्गमन 3:7-8)

इस प्रकार परमेश्वर की वाचा और उसकी शाश्वत योजना को पूरा करते हुए इस्राएल को वादा किए गए देश में ले जाने का अलौकिक अभियान शुरू हुआ।

इस्राएलियों को मिस्र से प्रभु के सामर्थी हाथ के द्वारा छुड़ाया गया, जिन्होंने मूसा को अपना पात्र चुना। शास्त्र कहता है, यहोवा ने अपने बलवन्त हाथ से हमें मिस्र से, अर्थात् दासत्व के देश से निकाला है।(निर्गमन 13:14)। प्रभु के सेवक मूसा के मरने के बाद, परमेश्वर ने मूसा के सहायक, नून के पुत्र यहोशू से बात की, और कहा:

"मूसा, मेरा सेवक, मर गया है। इसलिए, अब तुम और ये सभी लोग उठो और यरदन नदी पार करके उस देश में जाओ जिसे मैं इस्राएलियों को दे रहा हूँ। जिस-जिस स्थान पर तुम पाँव रखोगे, वह सब मैं तुम्हें दे दूँगा, जैसा कि मैंने मूसा से वादा किया था। तुम्हारा क्षेत्र जंगल और लेबनान से लेकर महानद, फरात तक - हित्तियों की सारी भूमि - महासागर तक फैला होगा जहाँ सूरज डूबता है।" (यहोशू 1:1-4)

यह कनान की प्रतिज्ञा की गई भूमि थी, जैसा कि प्रभु ने कहा था।

मूसा के बाद, परमेश्वर ने यहोशू के माध्यम से इस्राएलियों को कनान में पहुँचाया, और इस प्रकार, इस्राएल की भूमि स्थापित हुई। यहोशू ने इस्राएल के बारह गोत्रों के बीच भूमि के विभाजन की देखरेख की।

यहोशू के समय के बाद, इस्राएल पर तब तक न्यायियों का शासन था जब तक कि प्रभु ने भविष्यवक्ता शमूएल को नहीं खड़ा किया। बाद में, लोगों ने शाऊल को अपना राजा चुना। लेकिन जब शाऊल को अस्वीकार कर दिया गया, तो परमेश्वर ने दाऊद को, जो उसके अपने हृदय के मुताबिक था, शासन करने के लिए नियुक्त किया। दाऊद ने यरूशलेम पर विजय प्राप्त की और इसे इस्राएल की राजधानी बनाया, जिससे राष्ट्र की पहचान मजबूत हुई। "उसने हेब्रोन में सात वर्ष और छह महीने तक यहूदा पर शासन किया, और यरूशलेम में, उसने तैंतीस वर्ष तक पूरे इस्राएल और यहूदा पर शासन किया।" (2 शमूएल 5:5)

यदि परमेश्वर एक व्यक्ति-अब्राहम को ले सकता है-उसे आशीष दे सकता है, और उसे इस्राएल नामक एक महान राष्ट्र में बदल सकता है, तो वह आपको कितना अधिक आशीष देगा और बढ़ाएगा! यदि आप उसके चुने हुए लोगों के रूप में दृढ़ रहते हैं, तो प्रभु निश्चित रूप से आपको समृद्ध करेगा।

"अपने पिता इब्राहीम और अपनी जन्मायी सारा पर ध्यान करो। जब मैं ने उसको बुलाया, तब वह एक ही मनुष्य था, और मैं ने उसको आशीष दी, और बहुत बनाया।" (यशायाह 51:2)

जब तक हम अगले महीने फिर से नहीं मिलते, तब तक परमेश्वर का अनुग्रह आप सभी पर बना रहे!

सनसनीखेज खबर!

हेलो मित्रों! आप सब कैसे हैं? मैं इस रोमांचक श्रृंखला, सनसनीखेज खबर के माध्यम से एक बार फिर आपसे जुड़कर बहुत रोमांचित हूँ!

ठीक है, क्या हम सीधे शुरू करें? रुकिए, रुकिए—उससे पहले, चलिए इस संस्करण की शुरुआत कुछ खुशखबरी के साथ करते हैं! यह महीना जश्न मनाने का मौसम है। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि क्यों? हाँ! हम अपने प्रभु यीशु के पुनरुत्थान का जश्न मनाने वाले हैं! इससे बड़ी खुशी और क्या हो सकती है?

इसके बारे में सोचें—वह हमारे लिए पैदा हुआ, वह हमारे लिए मरा, और वह हमारे लिए फिर से जी उठा! एक ऐसे परमेश्वर का हमारे साथ होना कितना अविश्वसनीय आशीष है जिसने हमारे लिए सब कुछ किया है! सिर्फ इतना ही कहना कि, "हम एक जीवित परमेश्वर की आराधना करते हैं!" हमारे हृदय को गर्व और कृतज्ञता से भर देता है, है न? तो, प्रिय मित्रों, आप सभी को एक महिमामय और धन्य ईस्टर की शुभकामनाएँ!

वही यीशु जो मृतकों में से जी उठा, वह आज भी जीवित है और आज भी अनगिनत चमत्कार करके इसे साबित कर रहा है। और यही हम इस श्रृंखला के हर संस्करण में देख रहे हैं!

तो, बिना किसी देरी के, चलिए सीधे शुरू करते हैं!

एलिय्याह 9वीं शताब्दी ईसा पूर्व के सबसे प्रसिद्ध भविष्यवक्ताओं में से एक थे। यहाँ तक कि उनका नाम, जिसका अर्थ है "यहोवा मेरा परमेश्वर है," उनके जीवन और सेवकाई के साथ पूरी तरह से मेल खाता है। उनकी याला से जुड़ी एक उल्लेखनीय घटना इस सत्य को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। एक समय पर, परमेश्वर ने एलिय्याह को इस्राएल के शासक राजा अहाब को एक भविष्यवाणी देने का आदेश दिया, जिसमें कहा गया था कि तीन साल तक देश में बारिश नहीं होगी। जैसे-जैसे अकाल बढ़ता गया, परमेश्वर ने एलिय्याह को करीत के नाले के पास शरण लेने के लिए प्रेरित किया। लंबे समय तक सूखा पड़ने से निस्संदेह देश में भयंकर कठिनाई आएगी। लेकिन अभाव के बीच, परमेश्वर ने कुछ आश्चर्यजनक किया—उसने एलिय्याह को मांसाहारी भोजन उपलब्ध कराया! इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि उसने इस प्रावधान के लिए एक अप्रत्याशित स्रोत चुना : कौवे।

स्वाभाविक रूप से, हम कौवे के हाथों से कुछ भी प्राप्त करने की उम्मीद नहीं करेंगे। फिर भी, परमेश्वर ने ये आश्चर्यजनक आपूर्ति की योजना बनाई, इन्हीं पक्षियों को एलिय्याह के लिए दिन में दो बार रोटी और मांस लाने के लिए भेजा, जिससे वह अकाल के दौरान जीवित रहा।

अब, क्या ऐसा चमत्कार केवल एलिय्याह के समय में ही होता है? क्या परमेश्वर आज भी इस तरह के चमत्कार करेगा? एक जबरदस्त हाँ!—इंग्लैंड से एक हाल ही की, आश्चर्यजनक रिपोर्ट पुष्टि करती है कि हमारा परमेश्वर अभी भी वैसा ही है, इस वर्तमान युग में भी चमत्कार करने में सामर्थशाली है!

एक गरीब परिवार अत्यधिक गरीबी में संघर्ष कर रहा था। छोटे बच्चों के पास खाने के लिए कुछ नहीं था और वे भूखे मर रहे थे। उनकी दुर्दशा देखकर, माँ ने विश्वास के साथ उनका हौसला बढ़ाया, उन्हें बताया कि कैसे परमेश्वर ने एलिय्याह की ज़रूरत के समय में उसकी ज़रूरतें पूरी की थीं। उस रात, जब बारिश हो रही थी और ठंडी हवा चल रही थी, उसने खिड़कियाँ और दरवाज़े बंद कर दिए, और अपने बच्चों को खाली पेट बिस्तर पर लिटा दिया। लेकिन, एक बच्चा उठकर बैठ गया और पूछा, "माँ, मुझे संदेह है। अगर खिड़कियाँ बंद हैं, तो परमेश्वर द्वारा भेजा गया कौवा हमारे लिए भोजन कैसे लाएगा? अगर परमेश्वर हमें रोटी और मांस देते हैं, तो हमें तब तक नहीं मिलेगा जब तक हम कौवे के लिए खिड़कियाँ नहीं खोलते! कृपया उन्हें खोलें।" बच्चे की आस्था से माँ हैरान रह गई। बिना किसी हिचकिचाहट के, उसने खिड़की खोल दी।

उन्हें पता नहीं था कि उनके घर के बाहर, बारिश से बचने के लिए, शहर का मेयर खड़ा था। उसने उनकी बातचीत सुन ली थी। बहुत भावुक होकर, वह जल्दी से चला गया, बहुत सारा भोजन खरीदा, और जाने से पहले सावधानी से खुली खिड़की से पार्सल रख दिया। एक हल्की सी आवाज़ सुनकर, बच्चे खिड़की की ओर भागे और वहाँ भोजन के पार्सल पड़े हुए पाए। बहुत खुश होकर, उन्होंने कृतज्ञता में अपने हाथ उठाए, परमेश्वर को उनके प्रावधान के लिए धन्यवाद दिया।

और अब, आप सोच रहे होंगे—इस कहानी में कौवा कहाँ है? यहाँ सबसे आश्चर्यजनक हिस्सा है: मेयर के दोस्त उसे प्यार से 'रेवेन'(कौवा) कहते थे।

परमेश्वर के प्रिय बच्चों, क्या आप अपने जीवन में कौवों का इंतज़ार कर रहे हैं? इंतज़ार करने से ज़्यादा, आपके पास इन नन्हे-मुन्नों जैसा अटूट विश्वास होना चाहिए। तो, पहले विश्वास की खिड़कियाँ खोलो! कौन जानता है? हो सकता है कि परमेश्वर हमें किसी ज़रूरतमंद को आशीष देने के लिए कौवों के रूप में भी इस्तेमाल करे। तो तैयार रहो, मित्रों! जब तक हम अगले संस्करण में नहीं मिलते।

विश्व जागृति प्रार्थना भवन

Our Branches

Mumbai (Dharavi)
World Revival Prayer Canter, T/1, Block No.11,
90 Feet Road, Rajiv Gandhi Nagar Dharavi, Mumbai - 400 017
Email: br.dharavi@jesusredeems.org, Ph: +91 8082410410

Mumbai (Malad)
World Revival Prayer Center, Bethel, Plot 305/E,
Mith Chowky Marve Road, Malad(w) Mumbai - 400064
Ph: +91 9664050567

Ranchi
World Revival Prayer Centre, Kadru Sarna Toli,
Near Argora Railway Station, Road no -1, Doranda P.O
Ranchi - 834 002, Jharkand,
Email: br.ranchi@jesusredeems.org, Ph: 9523336010

Chandigarh
World Revival Prayer Centre, SCO 1st Floor, Dhakoli-Kalka Road,
NH-22, Near City Court Zirakpur, Punjab- 160104
Email: br.chandigarh@jesusredeems.org, Ph: 9417726492

Delhi
World Revival Prayer Centre, Plot no 152, Ground floor,
Pratap nagar,opposite harinagar bus depot, New Delhi - 110064
Email: br.delhi@jesusredeems.org, Ph: 011-25616253 / 35580428

Come and Pray

बेदारी के बीज

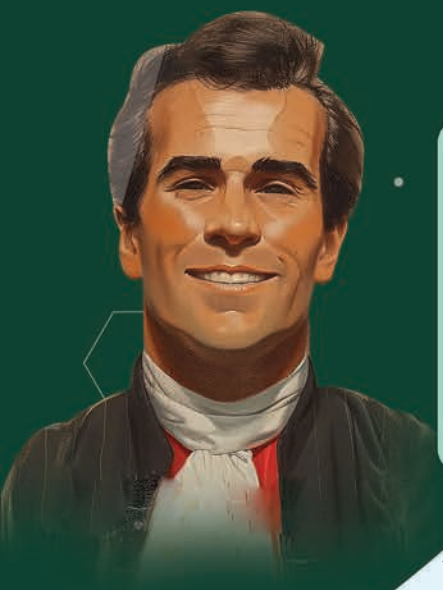

***डेविड ब्रेनर्ड** का जन्म 20 अप्रैल, 1718 को हैडम, कनेक्टीकट, यू.एस.ए. में हुआ था। वे अपने परिवार में नौ बच्चों में से छठे थे। उनके जीवन में त्रासदी बहुत पहले ही आ गई थी - उन्होंने नौ साल की उम्र में अपने पिता को खो दिया और जब वे सिर्फ़ चौदह साल के थे, तब उनकी माँ का देहांत हो गया। इन नुकसानों ने उन्हें दुख के बोझ से दबा दिया और छोटी उम्र से ही मृत्यु के गहरे भय ने उन्हें जकड़ लिया। नतीजतन, वे बचपन की खुशियों के बिना बड़े हुए, चंचलता और खुशी से रहित। सांत्वना की तलाश में, वे सांसारिक सुखों की ओर मुड़े, लेकिन अपराध बोध और आंतरिक उथल-पुथल से ग्रस्त हो गए।*

एक रविवार की सुबह, एक गहन विचार ने उनके हृदय को जकड़ लिया – परमेश्वर का भयानक क्रोध। गहरे अपराध-बोध से ग्रसित होकर, उन्होंने पूरे दिन उपवास और प्रार्थना की, अपने पापों के बोझ से जूझते हुए। जब उन्होंने पश्चाताप में अपना हृदय खोल दिया, तो परमेश्वर की दया ने उन्हें गले लगा लिया, उन्हें एक अडिग शांति से भर दिया।

21 साल की उम्र में, उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए येल विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। हालांकि, बीमारी के कारण उन्हें अपनी शिक्षा बंद करनी पड़ी। 1742 में, एबेनेज़र पेम्बर्टन के एक शक्तिशाली उपदेश ने उनके भीतर एक आग जला दी - मूल अमेरिकियों तक सुसमाचार ले जाने का आह्वान। सुनते ही ब्रेनर्ड का हृदय एक अलौकिक बोझ से जल उठा। उन्होंने सभी सांसारिक सुखों को पीछे छोड़ने का संकल्प लिया, कठिनाइयों को गले लगाया - यहाँ तक कि यदि आवश्यक हो तो मृत्यु को भी – उन लोगो के मध्य परमेश्वर का राज्य बनाने के लिए जिन तक सुसमाचार नहीं पहुंचा।

अपने बुलाहट की पुष्टि करते हुए, उन्होंने स्कॉटलैंड में एक मिशनरी संगठन के बारे में जाना जो मूल अमेरिकियों के लिए मिशनरियों को भेज रहा था। बिना किसी हिचकिचाहट के, वह उनके मिशन में शामिल हो गए, चाहे कोई भी कीमत क्यों न हो, मसीह की ज्योति को उजाड़ में ले जाने के लिए तैयार थे।

वह न्यूयॉर्क के कौनामीक में रहे और स्वयं को भाषाएँ सीखने के लिए समर्पित कर दिया। जॉन सार्जेंट के मार्गदर्शन में, उन्होंने सेवकाई और इसके कई पहलुओं में गहन अंतर्दृष्टि प्राप्त की। मूल अमेरिकियों के बीच कौनामीक में ही उन्होंने अपना मिशन कार्य शुरू किया।

उनके दिन सुबह होने से पहले ही शुरू हो जाते थे, प्रार्थना और ध्यान

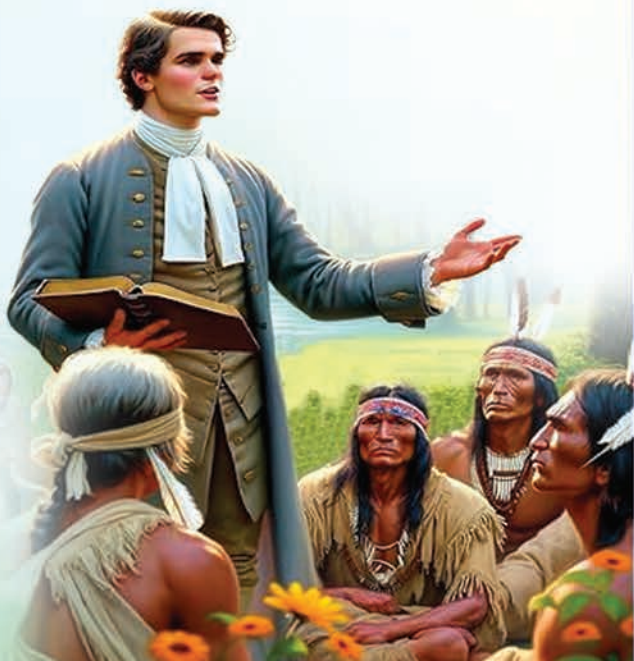

में डूबे रहते थे, स्वदेशी लोगों को सुसमाचार का प्रचार करने से पहले अपने हृदय को तैयार करते थे। उनकी सेवकाई यात्रा बहुत कठिनाइयों से भरी हुई थी। रात में, वे एक अस्थायी बिस्तर पर आराम करते थे - लकड़ी के तख्तों पर पुआल की एक परत रखी होती थी। ऊबड़-खाबड़ इलाकों और कठोर परिस्थितियों से विचलित हुए बिना, वे मसीह के संदेश को साझा करने के लिए अथक रूप से लंबी दूरी तक पैदल चलते थे। कठिनाइयाँ उनके निरंतर साथी थे। यहाँ तक कि रोटी जैसी बुनियादी चीज़ के लिए भी 15 मील पैदल चलना पड़ता था, जिससे उन्हें मूल अमेरिकियों के आहार को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।

जहाँ भी उन्होंने उपदेश दिया, लोगों के हृदयों को कायल कर दिया। लोगों ने उनकी बात सुनी, गहराई से विश्वास किया और ईमानदारी से मसीह को अपनाया। यहाँ तक कि बच्चे भी उनके संदेश से प्रभावित हुए। कुछ गोरे स्थानीय लोग, जिज्ञासु और शंकालु, शुरू में उन्हें पागल समझकर उनके पास आए। फिर भी, उन्हें सुनने के बाद, वे भी बदल गए। एक ही सप्ताह में, पच्चीस लोग साहसपूर्वक प्रभु की गवाही देने के लिए खड़े हुए, उनका जीवन हमेशा के लिए बदल गया।

वर्ष 1745 में, क्रॉसविक्स नामक स्थान पर एक महान आध्यात्मिक जागृति हुई। डेढ़ साल के अंदर ही 150 लोगों की आस्था बढ़ गई थी। वे जहां भी गए, उन्होंने चर्च स्थापित किए और लोगों को सत्य की ओर ले गए। ब्रिटिश अधिकारियों को डर था कि वे मूल निवासियों के बीच अशांति फैला रहे हैं और उनके शासन के खिलाफ काम कर रहे हैं, इसलिए उन्हें दंडित करने के तरीके खोजे जा रहे थे। फिर भी, कोई भी योजना या विरोध उनके मिशन में बाधा नहीं डाल सका।

सितंबर 1746 में, वे लगातार खांसी और बुखार से गंभीर रूप से बीमार पड़ गए, उनके शरीर में असहनीय दर्द हो रहा था। उस कमज़ोर अवस्था में भी, वे मूल निवासियों के बीच सेवा करने के लिए पैदल चले गए। हालाँकि वे एक ऐसे बिंदु पर पहुँच गए जहाँ वे न तो उठ सकते

थे, न चल सकते थे, न पढ़ सकते थे, न लिख सकते थे, लेकिन उनकी आत्मा दृढ़, जोश और खुशी से भरी हुई थी। जब डॉक्टरों ने घोषणा की कि उनका तपेदिक अपने अंतिम चरण में पहुँच गया है और बचना असंभव है, तब भी वे अविचल रहे, एक अडिग खुशी और उत्साह बिखेरते रहे।

पाँच वर्षों के अथक मिशनरी कार्य के बाद - जिसमें से 19 सप्ताह बिस्तर पर पड़े रहे - 9 अक्टूबर 1749 को 29 वर्ष की छोटी उम्र में उन्होंने अनंत काल में प्रवेश किया।

प्रिय युवा लोगों, बीमारी, कठिनाई या उत्पीड़न को ईश्वरीय आह्वान के प्रति आपकी प्रतिबद्धता को कम न होने दें! स्वदेशी लोगों की आत्माओं के लिए जुनून से लदे इस युवक ने सभी सुख-सुविधाओं को त्यागते हुए एक अपरिचित भूमि में पुनरुत्थान के बीज के रूप में अपना जीवन बलिदान कर दिया। आपके बारे में क्या? क्या आप हमारे देश के लोगों के लिए बोझ उठाते हैं? क्या आप अटूट जुनून के साथ उठेंगे, परमेश्वर के दिल की धड़कन को समझेंगे और स्वयं को उनके महान मिशन के लिए समर्पित करेंगे? ■

मैं एक प्रार्थना योद्धा हूँ

मेरे प्रिय नौजवानों, हमारे प्रभु यीशु के अनमोल नाम में आपको अभिवादन! पिछले महीने, "मैं एक प्रार्थना योद्धा हूँ" विषय के अंतर्गत, हमने जकर्याह को उसकी लगातार प्रार्थना के माध्यम से प्राप्त आशीषों पर विचार किया।

इस महीने, आइए हम **"आँसुओं के साथ प्रार्थना"** *पर ध्यान दें!*

एप्रैम के पहाड़ी क्षेत्र में रामतैम नामक एक शांत गाँव था, जहाँ एल्काना नामक एक व्यक्ति रहता था। उसके नाम का अर्थ है "परमेश्वर का अधिकार।" एल्काना की दो पत्नियाँ थीं- हन्ना और पनिन्ना। जबकि पनिन्ना को दस बच्चों की आशीष मिली, हन्ना के कोई नहीं था (1 शमूएल 1:2, 8)।

जब हम पद 10 की ओर मुड़ते हैं, तो हमें एक बहुत ही मार्मिक दृश्य मिलता है: "वह बहुत व्याकुल हो गई, उसने यहोवा से प्रार्थना की, और फूट-फूट कर रोई" (1 शमूएल 1:10)।

कौन रोया? वह क्यों रोई? वह किन परिस्थितियों में रोई? क्या उसकी प्रार्थना का उत्तर मिला?

हर साल, एल्काना अपनी दोनों पत्नियों और बच्चों को शिलोह ले जाता था, जो एप्रैम के पहाड़ी इलाके में बसा हुआ था, ताकि वह प्रभु को बलि चढ़ा सके। शिलोह नाम का मतलब ही है "आराम की जगह", एक ऐसा शरणस्थान जहाँ कोई रुक सकता है, प्रार्थना कर सकता है और परमेश्वर की हजूरी की तलाश कर सकता है। फिर भी, भक्ति के लिए इस पवित्र यात्रा में भी, हन्ना को कोई शांति नहीं मिली।

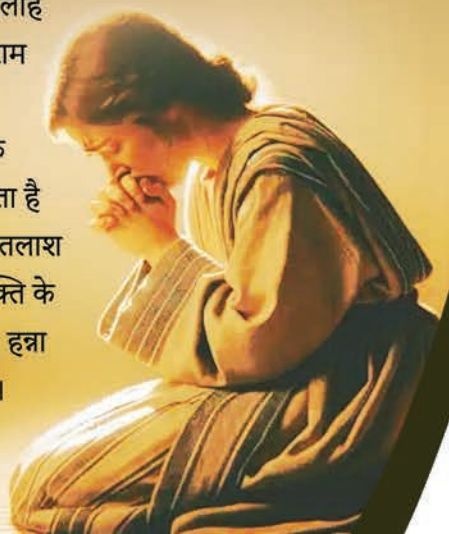

एलकाना की दूसरी पत्नी, पनिन्ना, लगातार उसका मजाक उड़ाती थी, क्रूरता से उस एक दुख को उजागर करती थी जो हन्ना के हृदय पर सबसे भारी था - उसका बांझपन (1 शमूएल 1:6)। उसके शब्द तीर की तरह थे, जो हन्ना की आत्मा को छेदते हुए उसे पीड़ा में छोड़ गए। दुःख से अभिभूत होकर, उसने अपनी भूख खो दी और फूट-फूट कर रोने लगी, उस दुःख को रोक नहीं पाई जिसने उसे खा लिया था।

एलकाना ने अपनी पत्नी को तुच्छ नहीं समझा; इसके विपरीत, वह उससे बहुत प्यार करता था और उसे दुगना हिस्सा देता था। फिर भी, उसके कोमल शब्दों के बावजूद—"तुम क्यों रो रही हो? तुम क्यों नहीं खाती? तुम्हारा मन क्यों परेशान है?"—उसकी आत्मा को कोई सांत्वना नहीं मिली। वह पहले भी अनगिनत बार शिलोह आ चुकी थी, लेकिन इस बार कुछ अलग था। अडिग संकल्प के साथ, उसने तय किया कि वह प्रभु से

चमत्कार प्राप्त किए बिना घर नहीं लौटेगी। सर्वशक्तिमान की उपस्थिति में, उसने अपने मन का बोझ बाहर निकाला, फूट-फूट कर रोते हुए उसने प्रार्थना की—"हे सेनाओं के प्रभु (यहोवा सबओथ), यदि आप मुझे एक पुत्र प्रदान करें..." वह प्रार्थना में बहुत देर तक डूबी रही, अपनी प्रार्थना की गहराई में खोई रही। दूर से, महायाजक एली ने उसे देखा। उसके होठों की खामोश हरकत और उसके चेहरे पर पीड़ा को गलत समझते हुए, उसने मान लिया कि वह नशे में है—परमेश्वर के भवन में बेतहाशा बड़बड़ा रही है। उसके दर्द को समझे बिना, उसने उसे डांटा, कहा, "तू कब तक नशे में रहेगी? अपनी दाखमधु छोड़ दे" (1 शमूएल 1:14)। महायाजक होने के बावजूद, एली उसके दुख की गहराई को समझने में विफल रहा। इस्राएल पर एक न्यायाधीश के रूप में अपने चालीस वर्षों के अनुभव के बावजूद, वह एक हताश हृदय की पुकार को नहीं समझ सका। न ही पेनिन्ना, जिसने केवल उसके दर्द को बढ़ाया।

अपने दुख में अकेले, वह यह सोचकर रोई होगी, "क्या कोई ऐसा नहीं है जो मुझे वास्तव में समझता हो?"

लेकिन सेनाओं का प्रभु मनुष्य की तरह नहीं देखता। उसने बाहरी दिखावे से परे देखा और हन्ना के दुख और लालसा को देखा। उसने अपने पैरों पर उसके आँसुओं से बुनी प्रार्थना सुनी और उसे एक पुत्र दिया - शमूएल। आज भी, आँसू भरी प्रार्थना से पैदा हुए बच्चे शमूएल के बारे में बात की जाती है, उसके बारे में प्रचार किया जाता है और उसे याद किया जाता है।

हन्ना की उत्कट प्रार्थना के जवाब में, परमेश्वर ने शमूएल को 17वीं पीढ़ी में कई अलौकिक भूमिकाएँ निभाने के लिए खड़ा किया:

1. एक लेवी,

2. एक याज़क,

3. एक महायाजक,

4. एक प्रधान महायाजक,

5. एक भविष्यवक्ता,

6. भविष्यवक्ताओं का अगुआ,

7. एक न्यायी,

8. वह जिसने राजाओं का अभिषेक किया।

परमेश्वर के प्रिय बच्चों, क्या आज आप दूसरों द्वारा तिरस्कृत महसूस कर रहे हैं? क्या प्रभु के सामने अपने आँसू बहाते हुए आपके साल बीत रहे हैं? अपनी आँखें सेनाओं के प्रभु की ओर उठाएँ! जिस परमेश्वर ने हन्ना का रोना देखा, वह आपका भी रोना देख रहा है। वह आपकी निंदा को गवाही में बदल देगा और आपको असीम आशीष देगा!

हर पांचवें रविवार को हमारे पास युवाओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम होता है - "रिवाइवल इग्नाइटर फ़ेलोशिप"। यह जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल पर 29/06/2025 और 31/08/2025 को दोपहर 3:00 बजे "लाइव" प्रसारित किया जाएगा।कृपया अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए नंबर पर हमसे संपर्क करें।

संपर्क संख्या : +919750955548

प्रार्थना मार्गदर्शिका

अप्रैल 2025

किशोरावस्था में गर्भधारण

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में चार में से एक महिला की शादी 18 वर्ष की आयु से पहले हो जाती है, और 15 से 19 वर्ष की आयु की 7.8% लड़कियाँ या तो गर्भवती हैं या पहले से ही माँ बन चुकी हैं। तमिलनाडु में, जहाँ पिछले पाँच वर्षों में गर्भधारण करने वाली विवाहित महिलाओं की संख्या में उल्लेखनीय कमी आई है, वहीं किशोरावस्था में गर्भधारण की दर में चिंताजनक रूप से वृद्धि हुई है। सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग की रिपोर्ट से पता चलता है कि किशोरावस्था में गर्भधारण की संख्या, जो 2019-20 में 11,772 थी, 2023-24 में बढ़कर 14,360 हो गई - 20% की वृद्धि। इसके अलावा, पिछले साल, सभी गर्भधारण में से 1.5% किशोर लड़कियों में थे।

प्रार्थना बिंदु

1. समय से पहले गर्भधारण को रोकने के लिए युवा पीढ़ी में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रार्थना करें।
2. वासनापूर्ण इच्छाएँ पैदा करने वाली आत्माओं को बाँधकर रखने के लिए प्रार्थना करें और प्रार्थना करें कि युवा लड़कियों को अपने भविष्य के बारे में डर हो।
3. प्रार्थना करें कि युवा लोग अपनी युवावस्था में ही प्रभु को जान सकें और उनमें परमेश्वर का भय पैदा हो।
4. उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो भ्रामक प्रेम में उलझे हुए हैं और कम उम्र में ही अपनी पवित्रता खो चुके हैं - वे परमेश्वर की ओर लौटें और मुक्ति पाएँ।

भारत में गरीबी

51.9% की गरीबी दर के साथ, बिहार भारत का सबसे गरीब राज्य है, जो गंभीर आर्थिक कठिनाइयों से जूझ रहा है। इसके ठीक पीछे झारखंड, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश हैं, जो क्रमशः दूसरे, तीसरे और चौथे सबसे गरीब राज्य हैं। इस रैंकिंग में मेघालय अगले स्थान पर है।

इन चुनौतियों के बावजूद, गोवा में गरीबी के स्तर में तेज़ी से गिरावट देखी गई है, साथ ही जम्मू और कश्मीर, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में भी गरीबी लगातार कम हो रही है। सभी भारतीय राज्यों में, केरल में सबसे कम गरीबी दर है, जहाँ केवल 0.71% आबादी गरीबी रेखा से नीचे रहती है। अन्य राज्यों में गरीबी दर काफी कम है, जिनमें गोवा (3.76%), सिक्किम (3.82%), तमिलनाडु (4.89%) और पंजाब (5.59%) शामिल हैं।

प्रार्थना बिंदु

1. आइए हम भारत में गरीबी के पूर्ण उन्मूलन के लिए प्रार्थना करें।
2. प्रार्थना करें कि बिहार के लोग, जो सबसे अविकसित राज्य है, गरीबी के संघर्षों पर विजय प्राप्त करके परिवर्तन का अनुभव करें और धन्य हों।
3. चावल और गेहूँ जैसी आवश्यक वस्तुओं की बिना किसी कमी के, उचित मूल्य पर उपलब्धता के लिए प्रार्थना करें।
4. प्रार्थना करें कि भारत सरकार आवश्यक पहल करे और पवित्र आत्मा देश के नेताओं को सही निर्णय लेने में मार्गदर्शन करे।

कृषि क्षेत्र

भारत में 11.8 करोड़ किसान हैं, जो कुल 18 करोड़ हेक्टेयर कृषि भूमि पर खेती करते हैं। वैश्विक स्तर पर, भारत खाद्य उत्पादन में चौथे स्थान पर है, जो सालाना 34.1 करोड़ टन खाद्यान्न पैदा करता है। गेहूं, चावल और गन्ना उत्पादन के मामले में यह देश दुनिया में दूसरे स्थान पर है। भारत के कृषि और संबद्ध उद्योगों में 64 करोड़ से ज़्यादा लोग काम करते हैं, जिनमें से 80% लोग सीधे खेती पर निर्भर हैं। हालाँकि, पिछले कुछ सालों में, 220,000 किसानों ने कर्ज के बोझ, गरीबी और अन्य विकट परिस्थितियों के कारण दुखद रूप से अपनी जान ले ली है। संकट को और बढ़ाते हुए, हर साल 7.4 करोड़ टन खाद्यान्न बर्बाद हो जाता है, जिससे खाद्य सुरक्षा और अकाल के मंडराते खतरे के बारे में गंभीर चिंताएँ पैदा होती हैं।

प्रार्थना बिंदु

1. आइए हम भारत के 11.8 करोड़ किसानों के उद्धार और परमेश्वरीय प्रावधान के लिए प्रार्थना करें।

2. आइए हम सरकार से ऐसी नीतियों को लागू करने के लिए प्रार्थना करें जो वास्तव में कृषक समुदाय को लाभ पहुँचाएँ और उनका उत्थान करें।

3. आइए हम कृषि भूमि पर परमेश्वर की सुरक्षा की प्रार्थना करें और भरपूर फ़सल के लिए प्रार्थना करें।

4. आइए हम अपने देश से आत्महत्या की भावना के पूर्ण उन्मूलन के लिए प्रार्थना करें।

पुलिस विभाग

भारत में कुल 13,765 पुलिस स्टेशन हैं, जिनमें देश भर में लगभग 20 लाख पुलिस अधिकारी कार्यरत हैं। इनमें से 215,504 महिला अधिकारी हैं। अकेले तमिलनाडु में 98,078 पुरुष अधिकारी और 76,599 महिला अधिकारी हैं, जिससे राज्य की सुरक्षा करने वाले कुल 135,042 कर्मचारी हैं। तमिलनाडु में 1,312 पुलिस स्टेशन हैं, फिर भी 9,365 पद रिक्त हैं, जो भर्ती की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

प्रार्थना बिंदु

1. आइए हम भारत भर में 2.1 मिलियन पुलिस अधिकारियों की सुरक्षा और कल्याण के लिए प्रार्थना करें।

2. प्रार्थना करें कि प्रत्येक अधिकारी ईमानदारी और न्याय के साथ सेवा करते हुए निष्ठा और निस्वार्थता बनाए रखे।

3. पुलिस कर्मियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करें, ताकि उनका तनाव दूर हो, कार्यभार कम हो और रिक्त पद भरे जाएँ।

4. आइए हम पुलिस अधिकारियों के उद्धार और बल के भीतर आध्यात्मिक जागृति के लिए मध्यस्थता करें।

समाचार

रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं, लेकिन वेतन स्थिर: नीति आयोग के सदस्य ने चिंता जताई

पिछले सात वर्षों में, रोजगार दर लगातार बढ़ रही है, जो जनसंख्या वृद्धि को पार कर गई है। उतार-चढ़ाव के बावजूद, समग्र प्रवृत्ति रोजगार के अवसरों में वृद्धि का संकेत देती है। 2017-18 में, श्रम बल भागीदारी दर 34.7% थी, जो अब 2023-24 वित्तीय वर्ष में 43.7% हो गई है।

हालांकि, इन वर्षों में मजदूरी में वृद्धि देखी गई है, लेकिन यह मुद्रास्फीति के साथ तालमेल नहीं रख पाई है। विशेषज्ञों के अनुसार, इसका मुख्य कारण श्रमिकों के बीच पर्याप्त कौशल स्तर की कमी है। विभिन्न देशों के तुलनात्मक डेटा इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि भारत का कार्यबल कौशल विकास में पिछड़ रहा है।

इसके जवाब में, केंद्र सरकार कार्यबल क्षमताओं को बढ़ाने के उपायों को लागू कर रही है। राज्य सरकारों को भी इस संबंध में सक्रिय कदम उठाने चाहिए। नीति आयोग के सदस्य ने जोर देकर कहा कि जब कौशल स्तर में सुधार होगा, तभी उत्पादकता बढ़ेगी, जिससे बेहतर वेतन और समग्र आर्थिक विकास होगा।

-हिंदू तमिल थिसाई, 03 मार्च

पिछले एक दशक में केंद्र सरकार ने कानूनी मामलों पर ₹400 करोड़ से अधिक खर्च किए

केंद्र सरकार ने पिछले दस वर्षों में कानूनी कार्यवाही पर ₹400 करोड़ से अधिक खर्च किए हैं। सरकार द्वारा जारी आधिकारिक आँकड़ों के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2023-24 में अकेले अदालती मामलों पर ₹66 करोड़ की राशि खर्च की गई - पिछले वर्ष (2022-23) की तुलना में ₹9 करोड़ की वृद्धि।

पिछले एक दशक में, कानूनी मामलों पर सरकार का संचयी व्यय ₹409 करोड़ से अधिक हो गया है। आँकड़ों को तोड़कर देखें तो 2014-15 में ₹26.64 करोड़ खर्च किए गए, जबकि अगले वर्ष (2015-16) में ₹37.43 करोड़ खर्च हुए।

7 लाख मामलों का लंबित मामला: देश की विभिन्न अदालतों में केंद्र सरकार से जुड़े लगभग 7 लाख मामले लंबित हैं। उल्लेखनीय है कि इनमें से करीब 2 लाख मामले वित्त मंत्रालय से जुड़े हैं। ये आंकड़े सरकार द्वारा उठाए गए महत्वपूर्ण कानूनी बोझ को उजागर करते हैं, जैसा कि आधिकारिक रिपोर्ट में बताया गया है।

- हिंदू तमिल थिसाई, 27 फरवरी

अंतरिक्ष विजेता

प्रिय युवा उपलब्धि प्राप्त करने वाले, आपको मेरा हार्दिक अभिवादन!
हमें दिए गए प्रत्येक क्षण का उपयोग करने का तरीका ही हमारा भविष्य निर्धारित करता है। यदि हम आज निष्क्रिय रहना चुनते हैं, तो हमें कल कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन यदि हम अभी कड़ी मेहनत करते हैं, तो आने वाले दिनों में सफलता हमारे पास पुरस्कार के रूप में आएगी। यहाँ एक ऐसे व्यक्ति की प्रेरक यात्रा है, जिसने अपने समय का अधिकतम उपयोग किया और महान ऊंचाइयों को छुआ।

तमिलनाडु के कन्याकुमारी के पास एक साधारण गाँव में जन्मे वी. नारायणन पाँच भाई-बहनों में सबसे बड़े थे। बचपन से ही, उनमें सीखने के प्रति असाधारण जुनून था। उन्होंने अपनी शिक्षा एक सरकारी स्कूल से शुरू की और बाद में एक सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल से दसवीं कक्षा की परीक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त किया। उनकी शैक्षणिक उत्कृष्टता ने उन्हें एक सरकारी पॉलिटेक्निक कॉलेज से इंजीनियरिंग में डिप्लोमा करने का मार्ग प्रशस्त किया। उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन ने उन्हें इसरो (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) में काम करने का अवसर दिलाया। मात्र 20 वर्ष की आयु में, उन्होंने इसरो में एक तकनीशियन के रूप में अपनी यात्रा शुरू की।

नौकरी की प्रतिबद्धताओं के बावजूद, नारायणन ने उच्च शिक्षा प्राप्त की और अंततः एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। इसरो में शामिल होने से पहले, उन्होंने अपने परिवार का समर्थन करने और अपने छोटे भाई की इंजीनियरिंग की पढ़ाई का खर्च उठाने के लिए दो साल तक निजी फर्मों में काम किया। हालाँकि, उनका अंतिम सपना रॉकेट विज्ञान में उल्लेखनीय योगदान देना था। अथक समर्पण और दृढ़ता के साथ, उन्होंने इसरो में रैंक हासिल की। आज, वे इसके सम्मानित अध्यक्ष के रूप में खड़े हैं। उनकी अटूट प्रतिबद्धता और विशेषज्ञता ने उन्हें प्रतिष्ठित पुरस्कार दिलाए हैं, जिसमें IIT खड़गपुर से रजत पदक और एस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया से स्वर्ण पदक शामिल हैं। बचपन में मिट्टी के तेल के दीपक की मंद रोशनी में पढ़ाई करने से लेकर अंतरिक्ष अनुसंधान के माध्यम से दुनिया को रोशन करने तक का वी. नारायणन का सफर वाकई असाधारण है। उनकी कहानी साबित करती है कि चाहे कितनी भी बाधाएँ क्यों न हों, दृढ़ता सपनों को हकीकत में बदल सकती है। इसे पढ़ने वाले सभी महत्वाकांक्षी बुद्धिजीवों के लिए - आज से ही अपने लक्ष्यों की ओर काम करना शुरू करें! टालमटोल करने से आपकी सफलता किसी और को मिल जाती है। आप जीत का दावा करते हैं या उसे हाथ से जाने देते हैं, यह पूरी तरह से आपके हाथ में है। इसलिए सपने देखने का साहस करें, अथक प्रयास करें और दुनिया को अपनी प्रतिभा का गवाह बनने दें!

मसीह के लिए दृढ़ रहने वाले शिष्य!

मसीह के लिए दृढ़ रहने वाले शिष्यों में से, इस महीने हम प्रेरित यूहन्ना पर ध्यान देंगे। मसीह के साथ अपने गहरे लगाव के कारण, वह अपने जीवन के अंत तक उनके प्रति वफादार रहे। वह इस विश्वास में जीते रहे कि "हमारी संगति पिता और उसके पुत्र, यीशु मसीह के साथ है" (1 यूहन्ना 1:3-10)।

यीशु मसीह के साथ उनका व्यक्तिगत संबंध असाधारण था: उन्हें प्रिय शिष्य के रूप में जाना जाता था और वे ही थे जो अंतिम भोज में यीशु की छाती पर झुके थे (यूहन्ना 13:23)।

वे ही वे थे जो मसीह के क्रूस पर चढ़ने के समय क्रूस के पास खड़े थे (यूहन्ना 19:26)। मसीह के कष्टों को प्रत्यक्ष रूप से देखने के बाद, वे उन्हें अपने जीवन के बाकी समय में कभी नहीं भूल सकते थे। इसी तरह, जो लोग मसीह के कष्टों के बारे में जानते हैं, आइए हम भी उनके प्रति अपने प्रेम में दिन-प्रतिदिन बढ़ते रहने की इच्छा करें।

केवल मसीह के प्रति हमारे प्रेम से ही हम अंत तक उनके प्रति वफादार बने रह पाएँगे। हमारे व्यक्तिगत निर्णय और बलिदान समय के साथ फीके पड़ सकते हैं, लेकिन क्योंकि युहन्ना मसीह के लिए प्रेम में जिए, इसलिए उसका कारावास भी उसे जेल जैसा नहीं लगा; इसके बजाय, यह प्रार्थना और परमेश्वर के साथ संवाद का स्थान बन गया। यही कारण है कि परमेश्वर उनके माध्यम से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को प्रकट करने में सक्षम था।

प्रेरित युहन्ना की तरह, जिन्होंने मसीह के प्रेम का अनुभव किया और अंत तक उसके लिए जीते रहे, आइए हम भी उसी तरह जीने का प्रयास करें। आइए हम मसीह के हमारे प्रति प्रेम पर गहराई से मनन करें। आइए हम उससे प्रेम करें और उसमें दृढ़ रहें।